मत कहो आकाश में कोहरा घना है,

यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है ||

~दुष्यंत कुमार

यह दुनिया एक भेड़चाल है मेरे दोस्त | और हम? हम इसमें चलने वाली भेड़ें |

किसी ने कहा है, कि यदि प्रत्येक व्यक्ति को उसके मन की करने दें, तो थोड़े समय के उपरान्त सभी लोग एक सी चीज़ करते पाये जाएंगे | इसलिए नहीं कि हमारे मन में कुछ करने की चाह नहीं है, परन्तु क्योंकि हम भेड़ें हैं, जज्बा नहीं है | हमें अनुसरण करने की आदत हो गयी है | हमें बदलाव से डर लगता है |  सर उठाने से डरते हैं, कहीं कोई हमें कतार के आगे न ले जाए और मोर्चे की अगवाही करने को कह दे | आगे बढ़ना भी चाहते हैं, और नहीं भी चाहते, इतना काम कौन करेगा, ना जी, हम दूसरों का मार्गदर्शन कर सकते हैं, पर अपना मार्ग सुधारने में अभी विलंभ है, कल देखते हैं |  अपनों के लिए डरते हैं, "टेढ़ा है, पर मेरा है" | अपने हित के बारे में सोचते हैं, अधिकारों का रोना रोते हैं, दायित्व से दूर भागते हैं | हम भेड़ें हैं, चरवाहा घास के मैदान में खुला छोड़ दे, बस, और क्या चाहिए |

Newtons first law of motion states that a body continues to be in its state of rest or of uniform motion, until and unless it is acted upon by a force. In short, it is its inherent nature, to resist change.

I am inertia. And the worst part is that I know every bit of it.

और चिन्तक लोग कहते हैं कि केवल कब्रिस्तान ही एक ऐसी जगह है जो बदलने से इनकार करती है | अरे कब्रिस्तान भी मुर्दों कि आवाजाही से आबाद होता है, बर्बाद तो वो होते हैं जो सब समझ कर भी चुप रहते हैं |

जब में छोटा था, एक व्यंग्य को समझ न पाया था | हरिशंकर परसाई जी ने लिखा है, 'रीढ कि हड्डी' | एक आदमी था, शरीफ आदमी, इज्ज़तदार आदमी | बेटी जिद करे तो कहता, "बेटियाँ ऐसी ही होती हैं', बीवी हुक्म चलाये तो कहता, 'बीवियां ऐसी ही होती हैं', दफ्तर में बॉस गुस्सा करता था तो कहता, 'बॉस ऐसे ही होते हैं', उसने, कभी कुछ चाह ही नहीं | यदि चाहा भी तो, माँगा नहीं, मांगने पर नहीं मिला तो दब कर, समझोता कर के कहा, 'ऐसा ही होता है' | केंचुए कि भी रीढ कि हड्डी नहीं होती | आज वही लक्षण देख कर मेरे अंदर का कायर सिहरा उठता है | पर मैं भी एक भेड़ हो चला हूँ,  शामिल हूँ उस, भेड़चाल में, जिसमे अधिकाँश दुनिया लगी हुई है | आज व्यंग्य खूब समझता हूँ, बस हंस नहीं पाता हूँ उस पर |

"I would not have any one adopt my mode of living on any account; for, beside that before he has fairly learned it I may have found out another for myself, I desire that there may be as many different persons in the world as possible; but I would have each one be very careful to find out and pursue his own way, and not his father's or his mother's or his neighbor's instead. The youth may build or plant or sail, only let him not be hindered from doing that which he tells me he would like to do. It is by a mathematical point only that we are wise, as the sailor or the fugitive slave keeps the polestar in his eye; but that is sufficient guidance for all our life. ~Walden"

कभी खुद पे कभी हालात पे रोना आया

बात निकली तो हरेक बात पे रोना आया ।

(साहिर लुधियानवी)

Where's my stand now, huh?

शिकायत तुमसे नहीं है कोई, कमज़ोर तो हम हैं,

जो तुम्हारी कमजोरियों में अपनी कमजोरियों को छुपाए,

चुप्पी साधे बैठे हैं, के कोई बात नहीं है,

देख लो, आज भी उतना ही रोए हैं, जितने से गुज़ारा चल जाए |

जानते हो उन भेड़ों के नसीब में आम तौर पर क्या लिखा होता है? या तो हलाल, वरना झटका |

[](http://3.bp.blogspot.com/-MFNjE8DmEyI/T8zwuNBjj0I/AAAAAAAAGLM/hRuLcLr_Efw/s1600/il_430xN.104771295_large.jpg)